साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 23-29 अक्टूबर 2023 वर्ष-9, अंक-28

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

केंद्र ने रबी की छह फसलों के समर्थन मूल्य में किया इजाफा

गेहूं की एमएसपी अब 2,275 और मसूर 6425 रुपए प्रति क्विंटल

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्र सरकार ने रबी सीजन की फसलों की एमएसपी की घोषणा कर दी है। रबी सीजन 2024-25 के लिए गेहूं का दाम 2275 रुपए प्रति क्विंटल होगा। जबकि सरसों का दाम 5650 रुपए प्रति क्विंटल होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने रबी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि को मंजूरी दी है। एमएसपी में सबसे अधिक वृद्धि मसूर (मसूर) के लिए 425 रुपए प्रति क्विंटल की गई है। सरसों के लिए 200 रुपए प्रति क्विंटल की मंजूरी दी गई है। गेहूं और कुसुम के लिए 150-150 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी को मंजूरी दी गई है। जौ के लिए 115 और चने के लिए 105 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी को मंजूरी दी गई है।

अप्रैल से प्रभावी होंगे दाम

रबी सीजन की छह मुख्य फसलों पर सरकार एमएसपी देती है, जिसमें गेहूं, जौ, चना, मसूर, सरसों और कुसुम शामिल हैं। एक अप्रैल 2024 से शुरू होने वाले खरीद सीजन में गेहूं का सरकारी दाम 2275 रुपए प्रति क्विंटल होगा। जौ का भाव 1850, चना का दाम 5440, मसूर का दाम 6425, सरसों का 5650 और कुसुम का 5800 रुपए प्रति क्विंटल होगा।

फसल	एमएसपी 2014-15	एमएसपी 2023-24	एमएसपी 2024-25	उत्पादन 2024-25	एमएसपी में वृद्धि	मार्जिन (फीसदी में)
गेहूं	1400	2125	2275	1128	150	102
जौ	1100	1735	1850	1158	115	60
चना	3100	5335	5440	3400	105	60
मसूर	2950	6000	6425	3405	425	89
सरसों	3050	5450	5650	2855	200	98
कुसुम	3000	5650	5800	3807	150	52

बजट 2018-19 के अनुसार घोषणा

रबी फसलों की एमएसपी में वृद्धि केंद्रीय बजट 2018-19 की घोषणा के अनुसार की गई है। कृषि लागत और मूल्य आयोग द्वारा लागत से कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर फसलों की एमएसपी तय की जाती है। यानी किसानों को जो लागत आती है उस पर कम से कम 50 फीसदी मुनाफा जोड़कर एमएसपी तय होती है।

केंद्र सरकार ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 150 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ाकर 2,275 रुपए क्विंटल कर दिया है। रबी की 5 अन्य फसलों जौ, चना, मसूर, सरसों, कुसुम की एमएसपी में भी बढ़ोतरी की है। ये फैसला कैबिनेट बैठक में लिया गया।

अनुराग ठाकुर, केंद्रीय मंत्री

सरकार के इस फैसले ने किसान कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को फिर सिद्ध किया है। किसानों की भलाई के लिए 9 साल में एक के बाद एक अनेक कल्याणकारी निर्णय लिए हैं। सीजन 2024-25 के लिए रबी फसलों के एमएसपी में वृद्धि की है। ताकि किसानों को उपज का लाभकारी मूल्य मिल सके।

नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय कृषि मंत्री

राष्ट्रपति ने चौथे कृषि रोड मैप को दिखाई हरी झंडी,बोली

किसान की बेटी हूं... राष्ट्रपति के बाद गांव में करूंगी खेती

भोपाल/पटना। जागत गांव हमार

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु तीन दिवसीय दौरे पर बिहार पहुंची। इसके साथ ही राष्ट्रपति ने अपने प्रवास के पहले दिन गांधी मैदान के पास बापू सभागार में बिहार के चतुर्थ कृषि रोड मैप (2023-2028) संस्करण का उद्घाटन किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि विकसित भारत के सपने को पूरा करने में बिहार से बहुत ही उम्मीद है। राष्ट्रपति के रूप में मेरी बिहार की पहली यात्रा भले हो, लेकिन झारखंड की राज्यपाल रहते हुए बिहार की सभ्यता और संस्कृति को काफी नजदीक से देखा है। इसलिए मैं अपने को बिहारी कह सकती हूं, क्योंकि मेरा गृह राज्य कभी बिहार का हिस्सा रहा है। राष्ट्रपति ने कहा कि आज बिहार कृषि के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है। पहले कृषि रोड मैप 2008 से लेकर अब तक राज्य दूध, मांस, मछली और सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में काफी अग्रणी है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में मुझे भी अपने गांव जाकर खेती करनी है। क्योंकि मैं भी एक किसान की बेटी हूं। राष्ट्रपति ने कहा कि मैं बिहार आती रहूंगी, क्योंकि मुझे भी खेती से जुड़ी जानकारी लेनी है। कृषि रोड मैप में क्या कुछ नया हो रहा है, इसके बारे में भी जानकारी हासिल करनी है। मैं भी एक किसान की बेटी हूं। राष्ट्रपति के बाद गांव जाकर मुझे भी खेती करनी है। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि बिहार सरकार ने जैविक खेती के लिए गंगा किनारे जैविक कॉरिडोर बनवाया है। यहां अब एथेनॉल का भी उत्पादन

बिहार की उन्नति का मार्ग कृषि से होकर गुजरता है

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने कहा कि बिहार जैसे राज्य की उन्नति के लिए कृषि का विकास जरूरी है। बिहार के किसान खेती में नए प्रयोग करने के लिए जाने जाते हैं। बिहार को विकसित राज्य बनाने के लिए समेकित विकास के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। बिहार को सभी क्षेत्रों में विकास के एक रोड मैप के तहत आगे बढ़ने की जरूरत है। इसी का एक सफल उदाहरण कृषि रोड मैप है। बिहार हर मामले में विकास करे तो ये मेरे लिए काफी खुशी की बात होगी क्योंकि बिहार को मैं अपना मानती हूं।

गेहूं की पराली जलाने में होशंगाबाद पहले और विदिशा दूसरे नंबर पर

पंजाब से ज्यादा मध्यप्रदेश में किसान जला रहे गेहूं की पराली

भोपाल। जागत गांव हमार

धान की कटाई शुरू होने के साथ ही पराली जलाने की घटनाएं भी होने लगी हैं। पिछले साल के मुकाबले इस बार पराली जलाने के मामले डबल हो गए हैं। इसके साथ ही प्रदूषण को लेकर भी चर्चा शुरू हो गई है। साथ ही ये भी कहा जा रहा है कि पराली जलाने से मिट्टी को नुकसान होता है और खेत में आग लगाने से मिट्टी में रहने वाले दोस्त कीटाणु मर जाते हैं, लेकिन पराली जलाने से मिट्टी को होने वाले नुकसान पर बात सिर्फ धान की पराली और पंजाब के किसानों के लिए ही होती है। पराली प्रदूषण के लिए धान और पंजाब ही सबसे ज्यादा कोसे जाते हैं, लेकिन, अगर पराली जलाने की घटनाओं पर ही बात करें तो गेहूं की फसल और मध्य प्रदेश का भी रिकॉर्ड बहुत खराब है। मध्यप्रदेश में गेहूं की पराली सबसे अधिक जलाई जाती है, लेकिन उससे होने वाले प्रदूषण पर कोई चर्चा तक नहीं होती। सरकार की सख्ती और अभियान भी खेतों तक नहीं पहुंच पाते हैं। अज्ञानता के करण किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। गेहूं की पराली जलाने की वजह से सूखे चारे का संकट बढ़ रहा है। जब से गेहूं की कटाई मशीनों से शुरू हुई है तब से खेतों में गेहूं के पौधों का अवशेष छूट जाता है और उसे किसान जला देते हैं। उससे भी जमीन की उर्वरता खराब हो रही है। वास्ताव में मिट्टी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए पराली जलाने से रोकने के लिए एक राष्ट्रीय गाइडलाइन तैयार की जानी चाहिए। चाहे वो धान की पराली हो या फिर गेहूं की हो। गेहूं की पराली जलाने के मामले में मध्य प्रदेश का होशंगाबाद पहले नंबर पर है, जहां एक ही सीजन में 4067 केस सामने आए थे। दूसरे नंबर पर विदिशा है जहां पर 3756 केस हुए। रायसेन में 2661 केस आए थे। चौथे नंबर पर यूपी का सिद्धार्थ नगर है जहां पर 2541 केस हुए थे। यहां के महराजगंज में 1495 जबकि पंजाब के फिरोजपुर में 1429 केस सामने आए थे।

गेहूं की पराली जलाने के 56 हजार केस

साल 2022 के सिर्फ दो महीने में ही 56 हजार से अधिक जगहों पर गेहूं की पराली जलाई गई थी। मध्य प्रदेश और पंजाब में सबसे ज्यादा घटनाएं हुई हैं, लेकिन हवा चलने की वजह से धुएं का उतना असर नहीं होता जितना इन दिनां धान की पराली जलाने से होता है। गेहूं की पराली जलाने की मॉनिटरिंग सिर्फ दो महीने तक (एक अप्रैल से 31 मई 2022) तक की गई थी और इस दौरान सिर्फ पांच राज्यों ही 56157 केस सामने आए थे। जबकि धान की पराली जलाए जाने की निगरानी ढाई महीने (15 सितंबर से 30 नवंबर 2022) के बीच छह राज्यों में की गई और इसमें 69,615 मामले आए थे। ऐसे में गेहूं पराली जलाने के मामले कहीं भी धान से कम नहीं दिखाई दे रहे हैं। लेकिन बदनाम सिर्फ धान है।

धान की पराली इसलिए बड़ा मुद्दा

किसान गेहूं के अवशेषों को भी जलाते हैं, लेकिन वायु प्रदूषण फैलाने के लिए सबसे ज्यादा बदनाम धान ही होता है। क्योंकि जब अक्टूबर-नवंबर में धान की पराली जल रही होती है तब हवा की रफ्तार अप्रैल-मई जैसी नहीं होती। यही नहीं, तब ओस भी पड़नी शुरू हो जाती है जिससे धूल और धुआं मिलकर सेहत के लिए खतरनाक हो जाते हैं। धान की पराली सबसे ज्यादा पंजाब में जलती है। जब यहां का धुआं दिल्ली में दम घोटने लगता है तो मुद्दा बड़ा हो जाता है।

मध्य प्रदेश सबसे आगे

केंद्र सरकार ने इस साल पांच राज्यों पंजाब, हरियाणा, यूपी, दिल्ली और मध्य प्रदेश में गेहूं के अवशेष जलाने के मामलों की सैटेलाइट से मॉनिटरिंग करवाई। एक अप्रैल से 31 मई तक दो महीनों के दौरान हुई मॉनिटरिंग में पता चला है कि मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा 27759 जगहों पर गेहूं की पराली जलाई गई है। इस मामले में दूसरे नंबर पर पंजाब था जहां पर 14511 घटनाएं हुईं। देश के सबसे बड़े गेहूं उत्पादक उत्तर प्रदेश में इसके 10981 मामले दर्ज किए गए। हरियाणा में 2878 मामले दर्ज किए गए। जबकि दिल्ली में 28 केस सामने आए थे।

किसान गन्ने के बेहतर उत्पादन के लिए गन्ने की बेहतर किस्मों का चुनाव करें

गन्ने की अच्छी पैदावार के लिए उन्नत कृषि क्रियाओं के साथ ही अच्छे प्रभेदों की आवश्यकता

शरदकालीन गन्ने की खेती के लिए टॉप पांच किस्में देगी बंपर पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

शरदकालीन गन्ने की खेती का समस आ गया है। इस समय किसान गन्ने उत्तम प्रभेदों की बुवाई करके काफी अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि गन्ना की खेती नकदी फसल के रूप में की जाती है। गन्ने से गुड़ व चीनी तैयार की जाती है। चीनी का उत्पादन गन्ने पर ही निर्भर करता है। गन्ने की अच्छी पैदावार के लिए उन्नत कृषि क्रियाओं के साथ ही अच्छे प्रभेदों की आवश्यकता होती है। वैसे भी कहा गया है जैसा बीज बोया जाएगा वैसी ही फसल तैयार होगी। इसलिए किसान गन्ने के बेहतर उत्पादन के लिए गन्ने की बेहतर किस्मों का चुनाव करें ताकि उनसे उत्पादित उत्तम क्वालिटी का गन्ना उत्पादित कर, उन्हें बेचकर अच्छा मुनाफा कमा सकें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए आज हम जागत गांव के माध्यम से आपको गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली टॉप पांच शरदकालीन गन्ने की किस्मों की जानकारी दे हैं। तो आइए जानते हैं, इसके बारे में।

शरदाकालीन गन्ने की खेती का उचित समय- शरदकालीन गन्ने की खेती का सबसे बेहतरीन समय 15 सितंबर से 30 नवंबर तक का होता है। इस समय गन्ने के प्रभेदों की बुवाई करने पर बेहतर पैदावार मिलती है। वहीं बसंतकाल के दौरान पूर्वी क्षेत्र के लिए मध्य जनवरी से लेकर फरवरी तक इसकी बुवाई की जा सकती है। मध्य क्षेत्र के लिए फरवरी से मार्च और पश्चिमी क्षेत्र के लिए मध्य फरवरी से मध्य अप्रैल का समय अच्छा माना जाता है।

गन्ने की टॉप 5 किस्में- गन्ने की बहुत सी किस्में हैं, लेकिन उनमें से हम यहां आपको गन्ने की टॉप 5 ऐसी किस्मों के बारे में जानकारी दे रहे हैं जो अधिक उत्पादन देती है और उनमें कीट, रोगों का प्रकोप होने की संभावना भी कम रहती है। गन्ने की टॉप 5 किस्में इस प्रकार हैं।

सीओ 05011 (करण-9) किस्म से कितनी मिलेगी उपज| गन्ने की सीओ 05011 (करण-9) की प्राप्त उपज की बात की जाए तो गन्ने की इस किस्म से औसत उपज 34 टन प्रति एकड़ प्राप्त की जा सकती है।

गन्ने की सीओ- 0124 (करण-5) किस्म| गन्ने की गन्ने की सीओ- 0124 (करण-5) किस्म को वर्ष 2010 में गन्ना प्रजनन अनुसंधान संस्थान, करनाल और गन्ना प्रजनन अनुसंधान संस्थान, कोयंबटूर की ओर से संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। यह सिंचित अवस्था में मध्यम देर से पकने वाली किस्म है। यह जलभराव और भराव दोनों स्थितियों में अच्छी उपज देती है। खास बात यह है कि गन्ने की यह किस्त लाल सड़न रोग के प्रति प्रतिरोधी है।

गन्ने की सीओ- 0124 (करण-5) किस्म से कितनी मिलेगी उपज| बेहतर कृषि क्रियाओं का उपयोग करके गन्ने की सीओ- 0124 (करण-5) किस्म से प्रति एकड़ करीब 30 टन तक का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

गन्ने की सीओ- 0237 (करण-8) किस्म| गन्ने की सीओ- 0237 (करण-8) वर्ष 2012 में गन्ना प्रजनन संस्थान क्षेत्रीय केंद्र करनाल ने विकसित की है। यह एक अगेती बुवाई के लिए उपयुक्त किस्म है। इस किस्त की खास बात यह है कि गन्ने की यह किस्म जल जमाव के प्रति सहनशील है। इसके अलावा यह किस्त लाल सड़न रोग के प्रति भी प्रतिरोधी किस्त मानी जाती है। इस किस्त की खेती मुख्य रूप से हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व मध्य उत्तरप्रदेश के किसान करते हैं।

गन्ने की सीओ- 0237 (करण-8) किस्म से कितनी मिलेगी उपज| गन्ने की सीओ- 0237 (करण-8) किस्म से करीब 28.5 टन प्रति एकड़ के हिसाब से उपज प्राप्त की जा सकती हैं।

गन्ने की सीओ 0238 (करण-4) किस्म

गन्ने की सीओ 0238 (करण-4) किस्म को आईसीएआर के गन्ना प्रजनन संस्थान अनुसंधान केंद्र, करनाल और भारतीय गन्ना प्रजनन संस्थान कोयंबटूर की ओर से जारी किया गया है। यह किस्त को वर्ष 2008 विकसित किया गया व 2009 में इसे किसानों के लिए जारी किया गया। इस किस्म की खास बात यह है कि यह किस्म पानी की कमी और जल भराव दोनों ही स्थितियों में अच्छा उत्पादन देती है। गन्ने की यह किस्म मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के लिए अधिसूचित की गई है।

सीओ 0238 (करण-4) से कितनी मिलेगी उपज

अब बात की जाए इस किस्म से प्राप्त उपज की तो गन्ने की सीओ 0238 (करण-4) से करीब 32.5 टन प्रति एकड़ तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इस किस्म की रिकवरी दर 12 प्रतिशत से अधिक है। इस किस्म की खेती सबसे ज्यादा पंजाब में होती है। यहां करीब 70 प्रतिशत किसान इसकी खेती करते हैं।

गन्ने की सीओ-0118 (करण-2) किस्म

गन्ने की सीओ 0118 (करण-2) किस्म गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, करनाल की ओर से विकसित की गई है। इसे वर्ष 2009 में जारी किया गया था। इस किस्म का गन्ना आकार में लंबा, मध्यम मोटा और भूरे बैंगनी रंग का होता है। इस किस्म के गन्ने के रस की क्वालिटी काफी अच्छी होती है। गन्ने की इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य उत्तर प्रदेश क्षेत्र के लिए अनुसंशित किया गया है। इन राज्यों के किसान इसकी खेती करके अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

- सीओ-0118 (करण-2) किस्म से कितनी मिलेगी पैदावार
- गन्ने की सीओ-0118 (करण-2) किस्म से किसानों को प्रति एकड़ 31 टन तक उपज प्राप्त हो सकती है।

गन्ने की सीओ 05011 (करण-9) किस्म

गन्ने की सीओ 05011 (करण-9) किस्म लंबी, मध्यम मोटी, बैंगनी रंग के साथ हरे रंग किस्म है। इसका आकार बेलनाकर होता है। खास बात यह है कि गन्ने की इस किस्म में लाल सड़न और उकठा रोग का प्रकोप कम होता है यानि यह किस्म लाल सड़न और उकठा प्रतिरोधी किस्म है। यह किस्म 2012 में जारी की गई। इस किस्म को आईसीएआर-गन्ना प्रजनन संस्थान क्षेत्रीय केंद्र करनाल और भारतीय गन्ना प्रजनन अनुसंधान संस्थान की ओर से विकसित किया गया है। यह किस्म प्रमुख रूप से हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्य उत्तर प्रदेश व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए अनुसंशित की गई है। यहां के किसान इस किस्म की बुवाई करके गन्ने का अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी उपज क्षमता 150-160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन

तोरई की ये किस्में देंगी किसानों को ज्यादा मुनाफा, जानें इनके नाम और पैदावार

भोपाल। किसी भी फसल की खेती से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए उसकी अच्छी किस्मों की जानकारी होना चाहिए। ताकि उत्पादन के साथ-साथ अधिक मुनाफा भी मिल सके। तोरई की खेती किसानों को अच्छा फयदा दिला सकती है। तोरई की कुछ उन्नत किस्मों में घिया तोरई, पूसा नसदार, सरपुतिया, को-1, पी के एम 1 आदि प्रमुख हैं। इनकी बुवाई कर किसानों को अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है। इसके साथ अधिक मुनाफा भी मिलेगा।

घिया तोरई - तोरई की इस किस्म के फल का रंग हरा होता है। भारत में इस किस्म की खेती आमतौर पर ज्यादा की जाती है। इस किस्म के यदि फलों की बात करें, तो इसके फल का छिलका पतला होता है। तोरई की इस किस्म में विटामिन की मात्रा अधिक पायी जाती है।

पूसा नसदार- तोरई की इस किस्म का फल हल्का हरा होता है। इसकी ऊपरी सतह पर उभरी नसें की आकृति होती है। इस किस्म का गूदा सफेद और हरा होता है। इसके साथ ही फल की लम्बाई 12-20 सेमी। होती है। इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी उपज क्षमता 150-160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

सरपुतिया- तोरई की इस किस्म के फल पौधों पर गुच्छों में लगते हैं। इनका आकार छोटा दिखाई देता है। वहीं, इस किस्म के फलों पर भी उभरी हुई धारियां बनी होती है। इसके फलों का बाहरी छिलका मोटा और मजबूत होता है। इस किस्म के तोरई मैदानी भागों में अधिक उगाए जाते हैं।

को-1| इस किस्म को तमिलनाडु के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म का फल आकार में 60 - 75 से।मी। लम्बा होता है। इसके अलावा लम्बे, मोटे, हल्के, हरे रंग का होता है। इस किस्म की उत्पादन क्षमता 140-150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। पहली तुड़ाई बुवाई के 55 दिनों बाद की जा सकती है।

पी के एम 1| इस किस्म के फल देखने में गहरे हरे रंग का होते हैं। इसके साथ ही फल देखने में पतला, लम्बा, धारीदार एवं हल्का से मुड़ा हुआ होता हैं। इससे 280-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज मिल सकती है।

कई राज्यों में एमएसपी से अधिक मिल रही उपज की कीमत

प्रदेश में खरीफ कुछ फसलों की कम मिल रही एमएसपी

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में फसलों की एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य को लेकर चर्चा जोरों पर रहती है। इस मुद्दे को लेकर 2020 में दिल्ली के बॉर्डर पर दशकों बाद बहुत बड़ा किसान आंदोलन हुआ। वहीं अन्य राज्यों में भी किसानों का एमएसपी को लेकर कई विरोध प्रदर्शन होते रहते हैं। किसान सरकार पर ये आरोप लगाते हैं कि सरकार फसलों का एमएसपी राशि नहीं देती है, जिससे किसानों को उनकी फसलों का उचित दाम नहीं मिलता है, लेकिन वर्तमान समय में खरीफ की कई ऐसी फसलें हैं जिन्हें अलग-अलग राज्यों में एमएसपी के निर्धारित मूल्य से अधिक पर खरीदा जा रहा है। वहीं खरीफ की कुछ फसलें ऐसी भी हैं जिनके दाम किसानों को एमएसपी से कम मिल रहे हैं। उनमें सोयाबीन भी है जिसे मध्य प्रदेश में खरीद पर 4.5 फीसदी कम दाम मिल रहा है। एमएसपी की निर्धारित मूल्य 4600 रुपए प्रति क्विंटल की जगह किसानों को 4395 रुपए मिल रहा है। महाराष्ट्र में ज्वार के किसानों को एमएसपी से कम दाम मिल रहा है। यहां किसानों को 3180 रुपए की जगह 2900 रुपए मिल रहा है। राजस्थान में बाजरे की खरीद पर भी किसानों को एमएसपी से कम दाम मिल रहा है। यहां किसानों को तय दाम 2500 रुपए की जगह 1981 रुपए मिल रहा है।

इन फसलों का अधिक दाम

खरीफ फसलों में कपास, अरहर, मूंगफली, मक्का और मूंग की कीमतें से अधिक मिल रही है। वहीं इन फसलों की आवक मंडियों में शुरू हो गई है। वर्तमान में देश भर की विभिन्न कृषि उपज विपणन समिति यार्डों में न्यूनतम समर्थन मूल्य 4.5 से 43 फीसदी तक अधिक दाम मिल रहा है। फसलों की मजबूत मांग और उत्पादन में घरेलू कमी के कारण दालों और तिलहनों की कीमतें एमएसपी से ऊपर चल रही हैं।

बढ़ती मांग से कीमत बढ़ी

कृषि मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि हालांकि उड़द और तुअर किस्मों के लिए आयात शुल्क को 31 मार्च, 2024 तक शुल्क मुक्त कर दिया गया है, लेकिन एमएसपी से ऊपर घरेलू बाजार की कीमतें किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेंगी।

यहां एमएसपी से अधिक दाम

महाराष्ट्र: अरहर दाल यानी तुअर की बाजार कीमतें वर्तमान में एमएसपी से 43 फीसदी अधिक चल रही है। अरहर दाल की एमएसपी कीमत जहां 7000 क्विंटल है। किसानों को उनकी उपज का 10000 रुपए क्विंटल दाम मिल रहा है।

गुजरात: कपास की फसल को 09 फीसदी अधिक दाम मिल रहा है। यहां किसानों को एमएसपी के निर्धारित दाम 6620 रुपए प्रति क्विंटल की जगह 7225 रुपए मिल रहा है।

कर्नाटक: मक्के की फसल को एमएसपी से 09 रुपए अधिक दाम पर खरीदा जा रहा है। यहां मक्के की एमएसपी 2090 रुपए प्रति क्विंटल है, लेकिन किसानों को उनकी फसल को 2099 रुपए दाम मिल रहा है।

गुजरात: मूंगफली की फसल पर किसानों को 13.6 फीसदी अधिक दाम मिल रहा है। किसानों को एमएसपी के निर्धारित दाम 6377 रुपए प्रति क्विंटल की जगह 7250 रुपए मिल रहा है।

राजस्थान: मूंग की खरीदारी निर्धारित मूल्य से 4.5 परसेंट अधिक दाम मिल रहा है। यहां मूंग की फसलों पर किसानों को एमएसपी के दाम 8558 रुपए की जगह 8948 रुपए मिल रहा है।

दलहन, तिलहन और कपास जैसी कई फसलों की बढ़ती मांग ने कीमतों को एमएसपी से आगे बढ़ा दिया है, जिससे किसानों को अधिक रिटर्न पाने में मदद मिलेगी। हालांकि मप्र सहित कुछ राज्यों में खरीफ की कुछ फसलों की एमएसपी किसानों को कम मिल रही है।
पीके जोशी, पूर्व निदेशक, आईएफपीआरआई

-खाद्यान्न के मोर्चे पर देश को बड़ी राहत, -केंद्रीय कृषि विभाग ने जारी किया अनुमान

गेहूं-चावल का उत्पादन तोड़ेगा रिकॉर्ड

भोपाल। जागत गांव हमार

अनाजों के मोर्चे पर अच्छी खबर है। सरकार ने 2022-23 में फसलों के उत्पादन का अनुमान जारी किया है जिसमें कई अनाजों के अच्छे उत्पादन की संभावना जताई गई है। गेहूं और चावल के मोर्चे पर अच्छी खबर है, क्योंकि इन दोनों अनाजों का उत्पादन रिकॉर्ड तोड़ सकता है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने वर्ष 2022-23 के लिए फसलों के उत्पादन का अंतिम अनुमान जारी कर दिया। फसलों के उत्पादन का मूल्यांकन राज्यों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। इस साल फसल अनुमान में रबी मौसम को जायद मौसम से अलग करके अधिक सटीक दृष्टिकोण अपनाया गया है। पूर्व में इन दोनों मौसमों को रबी श्रेणी के अंतर्गत जोड़ा जाता था। वर्ष 2022-23 के अंतिम अनुमान के अनुसार, देश में कुल अनाज उत्पादन

रिकॉर्ड 3296.87 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2021-22 के दौरान प्राप्त 3156.16 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 140.71 लाख टन अधिक है। वर्ष 2022-23 के दौरान खाद्यान्न उत्पादन बीते पांच वर्षों (2017-18 से 2021-22) के औसत खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 308.69 लाख टन अधिक है।

फसलों का अनुमानित उत्पादन

खाद्यान्न	3296.87 लाख टन
चावल	1357.55 लाख टन
गेहूं	1105.54 लाख टन
श्रीअन्न	573.19 लाख टन
मक्का	380.85 लाख टन
दलहन	260.58 लाख टन
तूर	33.12 लाख टन
चना	122.67 लाख टन
तिलहन	413.55 लाख टन
मूंगफली	102.97 लाख टन
सोयाबीन	149.85 लाख टन
सरसों	126.43 लाख टन
गन्ना	4905.33 लाख टन
कपास	336.60 लाख गांठें
मेस्ता	93.92 लाख गांठें

फसलवार उत्पादन

चावल: वर्ष 2022-23 के दौरान चावल का कुल उत्पादन रिकॉर्ड 1357.55 लाख टन अनुमानित है। यह पिछले वर्ष के 1294.71 लाख टन चावल उत्पादन से 62.84 लाख टन और विगत पांच वर्षों के 1203.90 लाख टन औसत उत्पादन से 153.65 लाख टन अधिक है।

गेहूं: वर्ष 2022-23 के दौरान गेहूं का कुल उत्पादन रिकॉर्ड 1105.54 लाख टन अनुमानित है। यह पिछले वर्ष के 1077.42 लाख टन गेहूं उत्पादन से 28.12 लाख टन और 1057.31 लाख टन औसत गेहूं उत्पादन की तुलना में 48.23 लाख टन अधिक है।

श्रीअन्न: मोटे अनाजों का उत्पादन 573.19 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2021-22 के दौरान प्राप्त 511.01 लाख टन उत्पादन की तुलना में 62.18 लाख टन अधिक है। यह औसत उत्पादन से भी 92.79 लाख टन अधिक है। श्री अन्न का उत्पादन 173.20 लाख टन अनुमानित है।

दलहन: 2022-23 के दौरान कुल दलहन उत्पादन 260.58 लाख टन अनुमानित है, जो विगत पांच वर्षों के 246.56 लाख टन औसत दलहन उत्पादन की तुलना में 14.02 लाख टन अधिक है।

तिलहन: 2022-23 के दौरान देश में कुल तिलहन उत्पादन रिकॉर्ड 413.55 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2021-22 के दौरान उत्पादन की तुलना में 33.92 लाख टन अधिक है। वर्ष 2022-23 के दौरान तिलहनों का उत्पादन 340.22 लाख टन औसत तिलहन उत्पादन की तुलना में 73.33 लाख टन अधिक है।

गन्ना: वर्ष 2022-23 के दौरान देश में गन्ने का उत्पादन 4905.33 लाख टन अनुमानित है। 2022-23 के दौरान गन्ने का उत्पादन पिछले वर्ष के 4394.25 लाख टन गन्ना उत्पादन से 511.08 लाख टन अधिक है।

कपास: उत्पादन 336.60 लाख गांठें (प्रति 170 किग्रा की गांठे) अनुमानित हैं, जो पिछले वर्ष के कपास उत्पादन की तुलना में 25.42 लाख गांठें अधिक है।

मेस्ता: पटसन और मेस्ता का उत्पादन 93.92 लाख गांठें (प्रति 180 किग्रा की गांठे) अनुमानित हैं।

राजधानी की सोनल 'हरा सोना' से कमा रहीं लाखों

भोपाल। हिंदू धर्म में गाय को माता के समान पूजा गया है और पहले के समय में हर घर में एक गाय जरूर होती थी, लेकिन आज का समय बदल चुका है। एक सुखद बात है कि लोग इतने आधुनिक होने के बाद भी अपनी संस्कृति का पालन कर रहे हैं। भारत में दूध अगर सफेद सोना है तो गोबर को भी हरा सोना कहा जाता है। जिस तरह दूध को प्रोसेस करके अलग-अलग तरह के उद्यम लगाए जा सकते हैं, वैसे ही गोबर से भी कई तरह के उद्यम शुरू किए जा सकते हैं। गोबर से खेतों के लिए खाद, रसोई के लिए बायो गैस बल्कि और भी कई अलग-अलग चीजें बनाई जा रही हैं। राजधानी भोपाल की सोनल श्रीवास्तव ने गाय के गोबर से बिजनेस शुरू किया है। सोनल गाय के गोबर से अलग-अलग प्रोडक्ट बनाकर ऑनलाइन सेल भी कर रही हैं और भोपाल के विभिन्न एग्जीबिशन में पार्टिसिपेट भी करती हैं।

छह साल से बना रहीं गोबर के प्रोडक्ट

सोनल श्रीवास्तव ने बताया कि, वैसे तो मैं आर्किटेक्ट हूं, लेकिन सौंदर्यकृति ब्रांड पिछले 6 साल से गाय के गोबर से बने अलग-अलग प्रोडक्ट बना रही हूं। ऑनलाइन में सर्च कर रही थी कि गाय के गोबर से कुछ प्रोडक्ट आते की नहीं मुझे ऑनलाइन जब मैंने देखा तो मुझे काफी पसंद आया और वहीं से आइडिया आया मुझे गाय के गोबर से अलग-अलग प्रोडक्ट बनाने में आज मैं अपने घर से ही या बिजनेस चला रही हूं।

बेंगलुरु चेन्नई के कस्टमर खरीद रहे

सोनल ने बताया कि ऑनलाइन, ऑफलाइन दोनों प्रकार से सेल करती हूं, अगर रॉ मटेरियल की बात करें। गाय का गोबर का पेस्ट मार्केट से लाती हूं और उसे अपने हाथों से ही बनाती हूं। इस काम के लिए मैंने दो लड़कियां भी रख रखी हैं। मेरे यहां प्रोडक्ट वॉल पेंटिंग, गणेश जी, शुभ लाभ, स्वास्तिक, ओम, पेन बॉक्स, इयररिंग्स, दिए, धूप बत्ती, यह सब सारी चीज आपको मिलेगी। ज्यादातर इस प्रोडक्ट को साउथ के लोग बेंगलुरु, चेन्नई, मुंबई से खरीदने के लिए आर्डर आते हैं। इसकी कीमतें बहुत ही रीजनेबल है। पांच रुपए से लेकर प्रोडक्ट मिल जाएंगे। सालाना में इससे दो से तीन लाख रुपए कमा लेती हूं।

भारत और मध्य प्रदेश की महत्वपूर्ण बकरी की नस्लें

» डॉ. सुलोचना सेन
» डॉ. राजेश वांद्रे
» डॉ. अभिलाषा सिंह
» डॉ. सुमन संत
» डॉ. बालेश्वरी कुर्मी
» डॉ. अनीता तिवारी
-पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग पशु पोषण विभाग, पशु विकिरता एवं पशुपालन
विस्तार शिक्षा विभाग, पशुजन स्वास्थ्य विभाग

भारत के गरीब किसानों के लिए बकरी, पशुधन की एक महत्वपूर्ण प्रजाति है। अत्यधिक कृषि जलवायु परिस्थितियों में बकरियां बेहतर तरीके से जीवित रहती हैं इसलिए बकरी पालन सूखे, अकाल आपदाओं और अन्य आपदाओं के प्रभावों के खिलाफ एक प्रकार का बीमा है। छोटी पीढ़ी के अंतराल के कारण बकरी को बड़े जानवरों से लाभप्रद माना जाता है। इसलिए बकरियों को गरीब आदमी की गाय कहा गया है। बीसवीं पशुधन गणना के अनुसार देश में बकरियों की संख्या 148.8 मिलियन है।

बकरी पालन किसानों के लिए खेती के साथ-साथ अतिरिक्त आय अर्जित करने का अच्छा माध्यम है। मटन की लोकप्रियता और बढ़ती मांग ने विशेष रूप से मांस के लिए बकरियों के व्यवसाय को बढ़ावा दिया है। इस उद्देश्य के लिए उत्तर भारतीय नस्लों की बहुत मांग है। बकरी पालन सबसे अधिक लाभदायक है और यह कई किसानों को इस उद्यम की ओर आकर्षित करता है।

दूध और मांस के लिए बकरी की नस्लें: बकरी की कई प्रकार की नस्लें होती हैं। कुछ दूध के लिए अच्छे होते हैं जबकि अन्य मांस के लिए और विशेष रूप से खाल के लिए. नस्लें भी होती हैं। दुधारू नस्ल ज्यादातर भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में निवास करती हैं। जमनापारी, झाखराना और बीटल को बड़े आकार की बकरियां माना जाता है, जिनकी दूध उत्पादन क्षमता बहुत अच्छी होती है।

1. जमनापारी: जामनापारी को देश की बकरी की नस्लों में बकरी की सबसे अच्छी दुधारू नस्ल माना जाता है। जमनापारी बकरी की नस्ल जमुना और चंबल नदी के आसपास के क्षेत्र में उत्पन्न हुई है। जमनापारी भारत में व्यावसायिक बकरी पालन के लिए सबसे लोकप्रिय नस्ल है। यह ज्यादातर उत्तर प्रदेश में जमुनापारी, इटावा, चंबल, आगरा, मथुरा, भिंड और मुरैना जिले में पाया जाता है। जमनापारी बकरियां सुंदर होती हैं और उनमें स्वस्थ जीन होते हैं और उन्हें देश की सबसे ऊंची बकरी की नस्ल के रूप में जाना जाता है। इस बकरी को मुख्य रूप से दूध के लिए पाला जाता है और प्रतिदिन 2.25 किलोग्राम से 2.7 किलोग्राम उत्पादन करती है। 250 दिनों की दुग्ध अवधि में दूध की उपज 250 - 300 किग्रा तक होती है। अधिकतर ये सफेद या पीले रंग के मिश्रित सफेद रंग के धब्बे वाले होते हैं। उनके पास एक घुमावदार नथुने की हड्डी होती है और लंबे फ्लैट गिरने वाले कान होते हैं। खास बात यह है कि वे प्रति वर्ष 300 से अधिक दिनों तक स्तनपान कराती हैं और प्रति दिन दूध की पैदावार लगभग 3 लीटर होती है। यह नस्ल आमतौर पर साल में एक मेमने को जन्म देती है। नर बकरियों का वजन 100 किलो तक और मादा का वजन 80 किलो तक होता है। जमनापरी को मांस के लिए भी पाला जाता है और यह अपने स्वाद के लिए जानी जाती है।

2. झाखराना: झाखराना बकरी की बड़े आकार की नस्ल है। इसका नाम राजस्थान राज्य के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में अलवर जिले में बहरोड़ तहसील के जखराना गांव से लिया गया है। बकरियों को मुख्य रूप से दूध उत्पादन के लिए पाला जाता है। इसमें दूध उत्पादन के लिए बकरी की जमनापारी नस्ल के बराबर आनुवंशिक क्षमता और विभिन्न प्रबंधन स्थितियों के तहत

बेहतर अनुकूलन क्षमता होती है। बकरी का रंग काला होता है इसलिए इसे स्थानीय नाम %काली कोटरी% के नाम से भी जाना जाता है। नस्ल में लंबे पेंडुलस कान के रूप में एक विशिष्ट विशेषता है जो सफेद रंग के होते हैं। दूध का उत्पादन प्रति दिन 2-5 लीटर से तक होता है।

3. बारबरी: बारबरी एक दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है, जिसे दूध और मांस के उद्देश्य से पाला जाता है। इसकी उत्पत्ति पूर्वी अफ्रीका के बेरबेरा सोमालिया शहर में हुई थी। नस्ल अत्यधिक विपुल और गैर मौसमी है और संयमित और स्टाल फीडिंग स्थिति के तहत पालन के लिए अच्छी तरह से अनुकूल है। यह एक छोटी नस्ल है और मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान में पाई जाती है। यह भारत में मुख्य रूप से आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, हाथरस, उत्तर प्रदेश के मथुरा जिलों और राजस्थान, भारत के भरतपुर जिले के आसपास विकसित और अनुकूलित है। इस नस्ल को गोद लिया गया है और देश के कई राज्यों में संबंधित बकरी विकास कार्यक्रमों के तहत और व्यावसायिक रूप से पालने के लिए भी इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। बकरियों का रंग मुख्य रूप से भूरा और सफेद होता है और कुछ नस्लों में काले धब्बे भी देखे जाते हैं। दैनिक दूध की उपज लगभग 760 ग्राम है। वयस्क पुरुषों का वजन 38-40 किलोग्राम और महिलाओं में 23-25 किलोग्राम से तक होता है।

4. बीटल: देशी नस्लों में, बीटल सबसे भारी डेयरी, प्रकार की बकरी की नस्लों में से एक है, जो दूध उत्पादन के लिए अच्छी तरह से जानी जाती है और इसका बड़े पैमाने पर क्रॉसब्रीडिंग और अन्य बकरी सुधार कार्यक्रमों में उपयोग किया जाता है। बीटल एक अच्छी डेयरी नस्ल है, जो आकार मंल जमनापारी के बाद दूसरे स्थान पर है, लेकिन इससे बेहतर है क्योंकि यह अधिक विपुल और विभिन्न कृषि पारिस्थितिक स्थितियों और स्टाल फीडिंग के लिए अधिक आसानी से अनुकूल है। बीटल पंजाब में भारत-पाकिस्तान सीमा पर पाई जाती है। हालांकि असली नस्ल के जानवर पंजाब के गुरदासपुर, अमृतसर और फिरोजपुर जिलों में पाए जाते हैं। नस्ल का नाम इसके मूल स्थान यानी पंजाब के गुरदासपुर जिले की तहसील बटाला के नाम पर रखा गया है। बटाला के आसपास शुद्ध जानवर पाए जाते हैं। इसे लाहौरी बकरी के नाम से भी जाना जाता है। इसके शरीर का आकार बड़ा और लंबे कान होते हैं। गहन बकरी पालन के लिए इन बकरियों को प्राथमिकता दी जाती है।

5. उस्मानाबादी: यह नस्ल मुख्य रूप से महाराष्ट्र में पाई जाती है और पश्चिमी महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के आसपास के हिस्सों में भी पाई जाती है। इस नस्ल का नाम इसके मूल स्थान से लिया गया है। हालांकि इसे दूध और मांस दोनों के लिए पाला जाता है, लेकिन यह मांस के लिए लोकप्रिय है। अधिकांश हिरन सींग वाले होते हैं और उनके सींग नहीं हो सकते हैं।

पराली समस्याः पर्यावरण हितैषी स्थायी समाधान

भारत सहित पूरी दुनिया के लगभग 80 प्रतिशत किसान धान की पराली जलाते हैं, जिससे गंभीर वायु प्रदूषण फैलता है। जो हर साल घनी आबादी और ज्यादा औद्योगिक घनत्व वाले भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में अक्टूबर-नवंबर महीने में हवा की गति कम होने और हिमालय से ठंडी हवा आने से बहुत ज्यादा गंभीर हो जाता है। इस वायु प्रदूषण समस्या के समाधान के लिए केन्द्र और राज्य सरकारें हजारों करोड़ रुपए खर्च करने के बाद भी विफल रही हैं। देश में सबसे ज्यादा उपजाऊ और सिंचित उत्तर पश्चिम भारतीय मैदानी क्षेत्र में हरित क्रांति के दौर में (1967-1975) राष्ट्रीय नीतिकारों द्वारा प्रायोजित धान-गेहूं फसल चक्र ने पिछले पांच दशकों से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और लगभग एक लाख करोड़ रुपए वार्षिक निर्यात को तो सुनिश्चित गया, लेकिन गंभीर भूजल बर्बादी, पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्या को बढ़ाया।

सरकार द्वारा फसल विविधिकरण के सभी प्रयासों के बावजूद धान-गेहूं फसल चक्र पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों में लगभग 70 लाख हेक्टेयर भूमि पर अपनाया जा रहा है, क्योंकि इन क्षेत्रो में मौसम अनुकुलता और आर्थिक तौर पर गन्ने की खेती के अलावा धान - गेहूं फसल चक्र ही किसानो के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद है।

उत्तर पश्चिम भारत के प्रदेशो में धान-गेहूं फसल चक्र में लगभग 40 किवंटल फसल अवशेष प्रति एकड पैदा होते हैं, जिसमें से आधे फसल अवशेष 20 किवंटल प्रति एकड यानि गेहूं के भूसे का प्रबंधन किसानों के लिए कोई खास समस्या नहीं है, क्योंकि पशु चारे के रुप में गेहूं का भूसा फायदेमंद होने और अगली फसल की बुआई की तैयारी में काफी समय (50-60 दिन) मिलने के कारण, किसान गेहूं भूसे का प्रबंधन आसानी से कर लेते हैं। लेकिन बाकि बचे आधे फसल अवशेष यानि धान पराली का प्रबंधन किसानों के लिए वर्षों से गंभीर समस्या बनी हुई है, क्योंकि धान की पराली आमतौर पशु चारे के लिए उपयोगी नहीं होने और अगली फसल की बुआई की तैयारी में मात्र 20 दिन से कम समय मिलने के कारण, धान कटाई के बाद पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश समेत अन्य राज्यों में बड़ी मात्रा में किसान पराली जलाते हैं।

इससे अक्टूबर-नवम्बर महीने में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित जम्मू से कोलकता तक के बहुत बड़े क्षेत्र में वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या पैदा होती है, जिस के कारण, पर्यावरण को नुकसान तो पहुंचता ही है, मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी प्रभावित होती है।

पराली जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए पिछले कुछ वर्षों से प्रदेश सरकारें/वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग, किसानो पर जूर्माना लगाने, बायों-डीकंपोजर से पराली गलाने, जैसे अव्यावहारिक प्रयास कर रही हैं. जिनके अभी तक कोई सार्थक परिणाम देखने को नहीं मिले हैं।

पूसा डीकंपोजर के प्रायोजक पूसा संस्थान का मानना है कि डीकंपोजर घोल के छिड़काव से 25 दिन बाद पराली कुछ नरम तो होती है, लेकिन इसे पूर्णयता गलने के लिए सात सप्ताह का समय चाहिए और बायो- डीकंपोजर कभी भी मशीनीकरण द्वारा पराली प्रबंधन का विकल्प नहीं बन सकता है। वहीं पंजाब कृषि विवि द्वारा किये गये अनुसंधान बताते हैं कि बायो-डीकंपोजर छिड़काव से कोई खास लाभ नहीं होता, जबकि धान कटाई के बाद गहरी जुताई द्वारा पराली को भूमि में दबाने और खेत में समुचित नमी बनाए रखने से, बिना बायो-डीकंपोजर छिड़काव भी पराली 7 सप्ताह में ही गल जाती है।

पराली को भूमि में दबाना ही पर्यावरण हितैषी स्थाई समाधानः धान पराली व फसल अवशेष प्रबंधन पर सभी अनुसंधान और तकनीकी रिपोर्ट इस बात पर एकमत है कि मशीनीकरण द्वारा फसल अवशेषों को खेत से बाहर निकाल कर उद्योगों आदि में उपयोग करना इसका सर्वोतम समाधान है। जैसा कि अमेरिका आदि देशों में वर्षों से हो रहा है।

इसके लिए कृषि वैज्ञानिकों और राष्ट्रीय नीतिकारों को उत्तर पश्चिम भारत के लिए, धान की खेती के लिए किसान और पर्यावरण हितेषी नयी तकनीक और बुआई कलेंडर आदि विकसित करने होंगे। पराली प्रदूषण और भूजल बर्बादी रोकने के लिए धान की सीधी बिजाई पद्धति में कम अवधि वाली किस्में एक सस्ता और कारगर उपाय है।

धान फसल की कटाई और रबी फसलों जैसे गेहूं , सरसों, आलू आदि की बुआई की तैयारी में कम समय मिलने के कारण ही किसान मजबूरन धान पराली जलाते हैं, जिसके लिए राष्ट्रीय नीतिकारों को पराली प्रदूषण और भूजल बर्बादी रोकने के लिए धान की सीधी बिजाई पद्धति में कम अवधि वाली धान किस्मों (जैसे पी.आर.-126 , पी. बी.-1509 आदि) को प्रोत्साहन एक कारगर उपाय साबित होगा और लम्बी अवधि की किस्मों पूसा-44 आदि पर कानूनी प्रतिबंध जरुरी है।

इसमें धान फसल की बुआई 20 मई से शुरू हो कर, फसल की कटाई 30 सितम्बर तक पूरी हो जाती है। उलेखनीय है कि रोपाई पद्धति के मुकाबले सीधी बिजाई में धान की सभी किस्में 10 दिन जल्दी पक कर तैयार हो जाती है, जिस कारण गेहूं फसल बुआई से पहले किसान को लगभग 45-50 दिन का समय धान पराली व फसल अवशेष प्रबंधन के लिए मिलता है। इसका सदुपयोग करके, किसान गेहूं - धान फसल चक्र में हरी खाद के लिए ढ़ैंचा, मूंग आदि फसल भी उगा सकते है, जिससे पराली जलाने से पैदा होने वाले पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी, भूमि की ऊर्वरा शक्ती बनाए रखने में मदद मिलेगी और रसायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होगी।

सरकार इन प्रदेशों में अगर धान की सरकारी खरीद की समय सारणी 15 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक का समय निश्चित करे, तो किसान स्वयं धान की सीधी बिजाई पद्धति में कम अवधि वाली धान किस्मों को ही अपनाएंगे, इससे लगभग एक तिहाई भूजल, ऊर्जा और खेती लागत में बचत के साथ पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा। इन प्रदेशों में लगभग 90 प्रतिशत धान की कटाई व गहाई कंबाईन हारवेस्टर मशीनों द्वारा किराये पर होती है। सरकार कानून बनाकर, पराली को भूमि में दबाने की जिम्मेवारी भी कंबाइन हारवेस्टर मालिक की निश्चित करे।

इस वर्ष खरीफ 2023 सीजन में, हरियाणा सरकार द्वारा धान की सीधी बिजाई प्रोत्साहन योजना के कारण, प्रदेश के किसानों ने तीन लाख एकड़ से ज्यादा भूमि पर धान की सीधी बिजाई विधि को अपनाया। जो पर्यावरण हितैषी धान की सीधी बिजाई विधि में किसानो के विश्वास को दर्शाता है।

लेखक वीरेन्द्र सिंह लाठर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक हैं।

पड़ोसी पौधों में रोग फैलने को नियंत्रित कर सकते हैं रोग-प्रतिरोधी धान और गेहूं के पौधेः शोध

रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए एक ही खेत में कई प्रकार के पौधों को उगाना एक लंबे समय से चली आ रही कृषि पद्धति के अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं। फ्रांस के मोंटपेलियर में इंस्टिट्यूट नेशनल डी रेचेर्चे पोर एग्रीकल्चर एलिमेंटेशन एट एनवायरनमेंट के जीन-बेनोइट मोरेल और उनके सहयोगियों द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि, पौधे एक दूसरे पर असर डालते हैं, जिससे गेहूं और धान दोनों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। ओपन एक्सेस जर्नल पीएलओएस बायोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि, पड़ोसी-संग्राहक संवेदनशीलता (एनएमएस) तब होती है जब स्वस्थ, समान प्रजाति के पड़ोसी पौधे बुनियादी प्रतिरक्षा और रोगजनकों के प्रति संवेदनशीलता को नियंत्रित करते हैं। हालांकि, एनएमएस को अभी तक अच्छी तरह से समझा नहीं गया है।

पौधों के रोग फैलाने वालों को कम करने के लिए एनएमएस की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए, शोधकर्ताओं ने चावल और ड्युरम गेहूं की 200 जोड़ी किस्मों में रोग के असर को मापा। उन्होंने चुनिंदा नस्ल की किस्मों से बने जीनोटाइप के एक समूह का चयन किया और इन्हें एक ऐसी जगह से चुना जो आधुनिक चयन से नहीं गुजरी थी।

नियंत्रित ग्रीनहाउस स्थितियों के तहत गमलों में उगाए गए समान-प्रजाति के मिश्रण के जोड़े को फंगल पर्ण रोगजनकों का टीका लगाया गया था। किसी भी रोगजनक के फैलने से पहले रोग की संवेदनशीलता की निगरानी की गई थी।

एक सांख्यिकीय मॉडल का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने एनएमएस की प्रासंगिकता और विभिन्न मिश्रणों में रोगजनक संवेदनशीलता पर पड़ोस से पड़ने वाले प्रभाव के सापेक्ष योगदान को निर्धारित करने में सक्षम थे। शोधकर्ताओं ने 23 समान-प्रजातियों के मिश्रण लगभग 11 फीसदी की पहचान की, जहां पौधे-से-पौधे के प्रभाव ने रोग फैलने को नियंत्रित किया, यह सुझाव दिया कि पड़ोसी-संग्राहक संवेदनशीलता एक अपेक्षाकृत लगातार होने वाली घटना है। उन्होंने पड़ोसियों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को देखा, जिससे पता चलता है कि पौधे से पौधे के परस्पर प्रभाव के परिणाम परिवर्तनशील हो सकते हैं।

शोधकर्ताओं ने बताया कि, अध्ययन की कई सीमाएं थीं, उदाहरण के लिए, केवल दो फसलों, धान और गेहूं पर परीक्षण किया गया। उन्होंने कहा, भविष्य के अन्य अध्ययनों में क्षेत्र आधारित परीक्षण शामिल हो सकते हैं, जहां पौधों को ग्रीनहाउस में उगाए जाने के बजाय कई बाहरी स्थितियों में उगाया जा सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, ये निष्कर्ष मिश्रण के उभरते, लेकिन अब अनुमानित गुणों के कारण कम संवेदनशील फसल मिश्रणों के अधिक टिकाऊ कृषि प्रथाओं को विकसित करने के लिए नए रास्ते खोलते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि रोगजनक संवेदनशीलता पर पौधे से पौधे के परस्पर प्रभाव के अप्रत्यक्ष प्रभाव हो सकते हैं। इसका अलग-अलग तरह की फसल सुरक्षा के साथ विभिन्न प्रकार के मिश्रण को डिज़ाइन करने के लिए उपयोग किया जाएगा। यह अध्ययन दिखाता है कि पौधों में ऐसी चीजें मौजूद है, पौधे संख्या के आधार पर अपनी प्रतिरक्षा को नियंत्रित करते हैं, जिससे फसल और पारिस्थितिकी शोध के लिए नए रास्ते खुलते हैं।

छतरपुर: किसानों के बीच कैसे पहुंचना है और किसानों की समस्या को किस प्रकार से हल करना है बताया गया

बीएससी कृषि फाइनल ईयर के 25 छात्र ले रहे प्रशिक्षण

छतरपुर। जागत गांव हमार

ग्रामीण कृषि कार्य के अनुभव के लिए कृषि विज्ञान केंद्र नौगांव जिला छतरपुर में रह रहे हैं। हाल ही में कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ के प्राध्यापकों द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र नौगांव का भ्रमण किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ के अधिष्ठाता डॉ. डीएस तोमर सर ने छात्रों को अवगत कराया गया कि आप लोगों ने जो भी बीएससी डिग्री में ज्ञान प्राप्त किया है। उस ज्ञान को किसानों के बीच कैसे पहुंचना है और किसानों की समस्या को किस प्रकार से हल करना है विस्तार से बतलाया गया। डॉ. वीणापाणी श्रीवास्तव (वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख) ने भी सभी छात्रों को बताया कि कॉलेज लाइफ में कैसे रहना है और कृषि को कैसे लाभ का धंधा बनाना है। डॉ. एसपी सिंह (कृषि महाविधालय टीकमगढ़ के रावे प्रभारी) ने सभी छात्रों को आवंटित ग्रामों मैं कृषकों के बीच रहकर किस प्रकार से कार्य करना है।

छह माह किसानों के साथ रहेंगे| विस्तार से अवगत कराया, डॉ. एमके नायक ने सभी छात्रों को कृषि के क्षेत्र में बढ़ने वाले महत्व को विस्तार से बतलाया गया। डॉ. संदीप कुमार रवरे (वैज्ञानिक एलपीएम) ने भी सभी छात्रों को अनुशासन में 6 माह किसानों के बीच रहकर किस प्रकार से कार्य करना है। विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई तथा अतर सिंह ने भी सभी छात्रों को बताया कि मौसम का कृषि पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है, उसको विस्तार से अवगत कराया गया।

फल उद्यान इकाइयों का भ्रमण भी कराया गया

इस कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ. कमलेश अहिरवार (वैज्ञानिक उद्यानिकी) के द्वारा किया गया। साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र के परिषर में प्रदर्शित नर्सरी इकाई एवं फल उद्यान इकाइयों का भ्रमण भी कराया गया। कार्यक्रम देवेन्द्र जाटव, अभिशेख पाटीदार, अंकित पाटीदार, हर्ष बघेल एवं अनिकेत शाक्य इत्यादि छात्रों ने भी अपने अनुभव व्यक्त किए। सभी छात्र 6 माह के लिए प्रायोगिक अनुभव (प्रशिक्षण) हेतु केन्द्र के अंर्तगत सिगरावन कला में, 13 छात्र एवं ठठेवरा में 12 छात्र किसानो के बीच रहकर अपने बीएससी (कृषि) डिग्री में सीखे ज्ञान को किसानो को बता रहे हैं और साथ ही किसानों से भी रावे छात्र सीख रहें हैं।

कुक्कुट फार्म में चूहों की रोकथाम के उपाय करने चाहिए

पोल्ट्री फार्म का व्यापार दे सकता है अच्छा मुनाफ, इन बातों का रखें ध्यान

भोपाल। जागत गांव हमार

अच्छा मुनाफा कमाने के लिए मुर्गी पालन एक बेहतरीन बिजनेस हो सकता है। यह कम लागत और पैसे की उपलब्धता के अनुसार शुरू किया जा सकता है। लेकिन इस व्यवसाय को शुरू करने से पहले आपको कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना होता है। क्योंकि मुर्गी पालन में संक्रमित रोग होने की संभावना ज्यादा रहती है। जिस कारण एक ही समय में बाड़े की कई मुर्गियों को नुकसान हो सकता है। मुर्गी पालन में हमें किन बातों का विशेष ध्यान रखना होता है।

अन्य सावधानियां

- मुर्गी पालकों को मुर्गी पालन से संबंधित महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना जरुरी है। मुर्गियों, पक्षियों को बाड़े में बंद रखना चाहिए।
- केवल मुर्गे-मुर्गियों की देखभाल करने वाले व्यक्ति को ही पक्षियों के पास जाने देना चाहिए।
- मुर्गे-मुर्गियों को दूसरे पशु-पक्षियों के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए। पक्षियों के संपर्क में आने वाली हर वस्तु की साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए।
- मुर्गियों को रखने के स्थान की और उसके आसपास के क्षेत्र की सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए, ताकि जीवाणुओं और विषाणुओं के प्रकोप से बचा जा सकें। पक्षियों के आहार एवं पानी को रोजाना बदलना चाहिए।
- मुर्गियों के बाड़े को नियमित रूप से सं मण मुक्त करते रहना चाहिए।
- नए पक्षियों को कम से कम 30 दिनों तक स्वस्थ पक्षियों से दूर रखा जाना चाहिए।
- किसी भी बीमारी को फैलने से रोकने के लिए मुर्गियों के संपर्क में आने से पहले और बाद में अपने हाथों को धोने के साथ ही कपड़ों और जूते-चप्पल को भी साफ करके संक्रमण मुक्त करना चाहिए।
- पक्षियों के संपर्क में आने वाले उपकरण, औजार आदि को भी सं मण मुक्त करना चाहिए।
- मुर्गियों के स्वास्थ्य पर नियमित नजर रखना चाहिए। साथ ही पक्षियों के आंखों, गर्दन और सिर के आसपास सूजन, कलगी, पंखों या टांगों का रंग बदलने तथा पक्षियों के कम अंडे देने पर सचेत हो जाना चाहिए, क्योंकि ये सभी बीमारी तथा संक्रमण के संकेत हो सकते हैं।
- मुर्गियों की हर सामान्य बीमारी अथवा मौत की सूचना तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय को देनी चाहिए।
- इनके अतिरिक्त मुर्गी पालकों को मुर्गियों के बाड़े से संबंधित निम्न बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।
- कुक्कुट फार्म में स्वच्छता रखकर एवं कीटाणुनाशन की प्रक्रिया से ही रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- कुक्कुट फार्म में चूजे लाने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिस हैचरी से चूजे लेने हैं, वहां गत तीन माह के दौरान मुर्गियों को किसी प्रकार का रोग नहीं हुआ हो।
- मुर्गियों के बाड़े के प्रवेश द्वार पर फुट बाथ हेतु सोडियम हाइड्रोऑक्साइड का घोल रखना चाहिए।
- फार्म के मुख्य द्वार पर वाहन को कीटाणु रहित करने के पश्चात ही उसे परिसर में प्रवेश करने देना चाहिए।
- पोल्ट्री फार्म परिसर में कुत्ते, बिल्ली व अन्य जंगली जानवरों को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए।
- मुर्गियों को प्रवासी पक्षी, वाटर फाउल, बत्तख आदि के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए।
- कुक्कुट फार्म में चूहों की रोकथाम के उपाय करने चाहिए और खरपतवार की भी सफाई करते रहना चाहिए।

लोबिया की उन्नत किस्मे, जो देंगी प्रति एकड़ 125 क्विंटल तक पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

लोबिया एक दलहनी फसल की श्रेणी में आने वाली फसल है, जिसकी खेती देश के छोटे व सीमांत किसानों के द्वारा सबसे अधिक की जाती है। क्योंकि यह फसल कम भूमि में भी अच्छी उत्पादन देती है। लोबिया की खेती खरीफ और जायद दोनों ही सीजन में की जाती है। लेकिन इसकी उन्नत किस्मों से किसान हर एक सीजन में लोबिया की बढ़िया पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। लोबिया की पांच उन्नत किस्में, जिसे लगाने के बाद आप प्रति एकड़ 100 से 125 क्विंटल पैदावार प्राप्त कर सकते हैं और साथ ही यह किस्में 50 दिनों के अंदर पककर पूरी तरह से तैयार हो जाती है।

लोबिया की पांच उन्नत किस्में

1. **पंत लोबिया:** लोबिया की इस किस्म के पौधे लगभग डेढ़ फीट तक ऊंचे होते हैं। पंत लोबिया को खेत में लगाने के 60 से 65 दिन के अंदर पककर तैयार हो जाती है। लोबिया की यह किस्म प्रति हेक्टेयर 15 से 20 क्विंटल तक उत्पादन देती है।
2. **लोबिया 263**| लोबिया की यह किस्म अगेती फसल हैं, जो खेत में 40 से 45 दिनों के अंदर पक जाती है। लोबिया 263 किस्म से किसान प्रति हेक्टेयर करीब 125 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।
3. **अर्का गरिमा किस्म**| लोबिया की अर्का गरिमा किस्म बारिश व बसंत ऋतु के दौरान बढ़िया पैदावार देती है। अर्का गरिमा किस्म 40-45 दिनों में पक जाती है और प्रति हेक्टेयर लगभग 80 क्विंटल तक उत्पादन देती है।
4. **पूसा बरसाती किस्म**| लोबिया की इस किस्म के नाम से ही पता चलता है, कि किसान इसे अपने खेत में बारिश के समय लगाएं, तो उन्हें अच्छा उत्पादन मिलेगा। लोबिया की पूसा बरसाती किस्म की फलियां हल्के हरे रंग की होती है। यह किस्म करीब-करीब 26 से 28 सेमी लंबी होती है और यह खेत में 45-50 दिन में पक जाती है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर 85-100 क्विंटल तक पैदावार देती है।
5. **पूसा ऋतुराज किस्म**| इस किस्म की लोबिया खाने में बहुत ही अच्छी मानी जाती है। इसकी किस्म की फलियां हरी रंग की होती है और यह प्रति हेक्टेयर करीब 75 से 80 क्विंटल तक उपज प्राप्त होती है।

सर्दियों में पशुओं के लिए बेहतर चारा है अजोला घास

भोपाल। पशुओं के लिए कई बार किसानों के लिए हरे चारे की व्यवस्था करना कठिन होता है। लेकिन एक घास ऐसी है जिससे पशुओं के लिए अपने खेतों पर किसान बड़ी ही आसानी से तैयार सकता है साथ ही अच्छा उत्पादन भी प्राप्त कर सकता है।

दरअसल, ये घास है अजोला आपके लिए यह नाम काफी नया हो, लेकिन कई किसानों के लिए यह बिलकुल भी नया नहीं है। इसे सर्दियों में पशुओं के लिए बेहतर चारा माना जाता है। असल में अजोला एक तरह की जलीय फर्न है, जो पानी की सतह पर उगता है।

हरी खाद के रूप में इसकी खेती की जाती है। जो उर्वरक क्षमता बढ़ाने के काम आती है। नम जमीन पर यह जिंदा रहता है। अच्छे विकास के लिए अजोला को भूमि की सतह पर 5 से 10 सेंटीमीटर ऊंचे जलस्तर की ज़रूरत होती है। 25 से 30 डिग्री टेम्परेचर इसकी वृद्धि के लिए उपयुक्त माना जाता है।

जलवायु परिवर्तन और सूखे के कारण चने की उपज सालाना 60 फीसदी तक घट जाती है...

किस्म विल्ट, कॉलर रोट, स्टंट रोगों के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी और शुष्क

चने की तीन नई किस्में अधिक उपज के साथ किसानों को कर सकतीं हैं मालामाल

भोपाल। जागत गांव हमार

बदलते जलवायु परिवर्तन के हिसाब से जलवायु अनुकूल चने की सूखा सहने की क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और अधिक उपज देने वाली चने की तीन नई किस्में विकसित की गई हैं। इन किस्मों को भारतीय किसानों के लिए साल 2021 में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा खेती के लिए अधिसूचित किया गया था। कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक, भारत के चना उत्पादक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और सूखे के कारण चने की उपज सालाना 60 फीसदी तक घट जाती है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में चने तीन नई किस्में आइपीसीएल 4-14, पूसा 4005 और समृद्धि किसानों के लिए बेहतर उपज दिला सकती हैं। वर्षा आधारित क्षेत्र हो या सिंचाई क्षेत्र, दोनों जगहों में ये किस्में बढ़ते तापमान और सूखे की परिस्थितियों में बेहतर उत्पादन दे सकती हैं। आईपीसीएल 4-14 चने की किस्म साल 2021 में रिलीज की गई थी और इस किस्म को भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर द्वारा विकसित किया गया है। इसका प्रति एकड़ उत्पादन 7 से 8 क्विंटल होता है। यह किस्म 128 से 133 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म को भारत में चने की खेती को प्रभावित करने वाली जलवायु परिस्थितियों और अन्य कारकों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित किया गया है। इस किस्म की खेती से वातावरण में सूखे की स्थिति में बेहतर उत्पादन मिल सकता है। इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर के मैदानी इलाकों, राजस्थान के कुछ हिस्सों और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जारी किया गया है। यह सिंचित और समय पर बुवाई के लिए बेहद बेहतर किस्म है। यह किस्म विल्ट, कॉलर रोट, स्टंट रोगों के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी और शुष्क जड़ सड़न के प्रति मध्यम रूप से सहनशील है।

पूसा 4005 जलवायु चुनौती में भी बेहतर

पूसा 4005, यानी बीजीएम 4005, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित गई है और इसे 2021 में खेती के लिए जारी किया गया था। इसकी उपज क्षमता सूखे की परिस्थितियों में प्रति एकड़ 8 क्विंटल होती है। यह किस्म लगभग 130 से 131 दिनों में तैयार हो जाती है। इस किस्म को भारत में चने की खेती को प्रभावित करने वाली जलवायु परिस्थितियों और अन्य कारकों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित किया गया है। इस किस्म को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जारी किया गया है। यह किस्म विल्ट यानी उकठा रोग, कॉलर रोट, स्टंट रोगों के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है और शुष्क जड़ सड़न के प्रति मध्यम रूप से सहनशील है।

समृद्धि किस्म इन राज्यों के लिए बेहतर

समृद्धि (आईपीसीएमबी 19-3) देसी किस्म है, जिसे भारतीय दलहन अनुसंधान केंद्र कानपुर ने विकसित किया है। इसे 2021 में किसानों के लिए खेती के लिए जारी किया गया था। यह उकठा रोग के प्रति प्रतिरोधी किस्म है और सिंचित स्थिति में खेती के लिए बेहतर है। इसकी उपज क्षमता प्रति एकड़ 8 से 9 क्विंटल है। इस किस्म की खेती मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और यूपी के बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए बेहतर है। यह किस्म 100 से 110 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

चने की बुवाई के समय इन बातों का रखें ध्यान

चने की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 से 30 अक्टूबर तक है। निचले क्षेत्रों में चने की बुवाई नवंबर में करनी चाहिए। चने की खेती चिकनी दोमट या बारीक दोमट मिट्टी वाले खेतों में करनी चाहिए। सीड ड्रिल से 6 से 8 सेमी। गहराई पर बोनी चाहिए और लाइन से लाइन की दूरी 30 से 45 सेमी होनी चाहिए। चने की बुवाई के लिए छोटे आकार की किस्म का बीज दर 26 किलोग्राम, मध्यम आकार के चने की किस्म का बीज दर 30 किलोग्राम और बड़े दाने वाली किस्म का बीज दर 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से बोना चाहिए।

बुवाई से पहले ये काम करना न भूलें

चने का बीज बोने से पहले बीज का उपचार करना न भूलें, क्योंकि इसमें उकठा रोग, रतुआ रोग, शुष्क जड़ रोग का प्रकोप अधिक होता है। इसलिए बीज बोने से पहले बीज का उपचार करें। चने के उकठा रोग और गलन रोग की रोकथाम के लिए 2।5 ग्राम थीरम या 1 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। कीटों से रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफोस 1 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। इसके बाद चने की अधिक पैदावार के लिए राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। 200 ग्राम कल्चर का एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज उपचार के लिए पर्याप्त है। कल्चर को बाल्टी में घोलकर 10 किलो बीज डालकर अच्छी तरह मिला लें ताकि सभी बीज अच्छी तरह मिल जाएं। कुछ समय बाद चने की बुवाई करनी चाहिए।

सरसों की फसल के लिए बुवाई का सही समय अक्टूबर से नवंबर माह तक

किसान श्री विधि से करें सरसों की बोवनी, मिलेगी दोगुनी तक उपज

भोपाल। जागत गांव हमार

किसानों ने अभी तक अपने खेत में श्री विधि से केवल धान-गेहूं की ही बुवाई कर अधिक पैदावार प्राप्त की होगी। श्री विधि की सरसों बुवाई के बारे में कई वैज्ञानिकों ने रिसर्च किया है और पाया कि इस विधि से सरसों की फसल की अधिक से अधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। दरअसल, श्री विधि में एक पौधे से दूसरे पौधे के बीच में लगभग 20 से 50 सेमी तक की जगह छोड़ी जाती है। ताकि पौधे सही तरीके से विकसित हो सके। इस विधि में पानी की मात्रा भी बेहद कम लगती है। वहीं, सरसों की फसल के लिए बुवाई का सही समय अक्टूबर से नवंबर माह तक होता है।

बीज का चयन और मात्रा- श्री विधि से सरसों की बुवाई करने के लिए किसानों को किसी तरह के

खास बीजों की आवश्यकता नहीं पड़ती है, इसके लिए आप सरसों की सामान्य किस्मों का भी चयन कर सकते हैं। वहीं, बीज की मात्रा उसकी अवधि पर निर्भर करती है। अगर बीज अधिक दिनों में पकने वाली किस्म हैं, तो खेत में कम बीज ही लगाए और वहीं कम दिनों में तैयार होने वाले बीज को अधिक मात्रा में लगाएं।

सरसों की फसल के बीज उपचार

सरसों की अच्छी उपज पाने के लिए बीजों का उपचार करना बहुत जरूरी है। इसके लिए आप बीज की मात्रा के हिसाब से अधिक पानी लें और फिर इसमें आपको बीज को डाल देना है। इसमें आपको उन बीजों को बाहर निकाल देना है, जो पानी के ऊपर तैर रहे हो। इसके बाद आपको गुनगुने पानी में बीज की मात्रा से आधी मात्रा में गोमूत्र, गुड़ और वर्मी कम्पोस्ट सही तरह से मिलाकर छह से आठ घंटे के लिए छोड़ देना चाहिए। फिर आपको बीज में तरल पदार्थ से अलग कर दो ग्राम बाविस्टीन या कार्बेंडाजिम दवाई को मिलाकर सूती कपड़ा में बांधकर पोटली कर लें। इस तरह से इसे कम से कम 12-18 घंटे तक रखें।

सरसों की नर्सरी की तैयारी

- इसके लिए आप सब्जी वाले खेत का चयन करें।
- खेत में फसल अवधि के मुताबिक ही छोटा-बड़ा नर्सरी बेड बनाएं। ध्यान रहे कि इन बेड की चौड़ाई और लंबाई 1 मीटर तक होनी चाहिए।
- इसके बाद प्रति वर्ग मी। में 2 से 2।5 किग्रा। वर्मीकम्पोस्ट, 2 से 2।5 ग्राम कार्बोफ्यूरान मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाएं।
- फिर दो बेड के बीच 1 फिट की नाली तैयार करें।
- ध्यान रहे कि सरसों के बीज की बुवाई करते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।
- खेत में अंकुरित बीज 2 इंच कतार से कतार और 2 इंच बीज से बीज की दूरी पर लगाए। इन बीजों की गहराई कम से कम आधा इंच रखें।
- इन सब के बाद नर्सरी बेड को वर्मीकम्पोस्ट और पुआल से ढक दें।
- फिर आपको खेत में सुबह-शाम झारी सिंचाई करनी है।
- इस विधि को आप अगर अपनाते हैं,तो ऐसे में आप 12 से 15 दिनों में रोपाई कर सरसों के पौधे तैयार कर सकते हैं।

सरसों के खेत की तैयारी

- सरसों की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए आपको सबसे पहले खेत में पर्याप्त नमी को बनाए रखना होगा।
- अगर किसी कारणवंश आपका खेत सूख गया है, तो इसे फिर से सिंचाई कर जुताई करें और मिट्टी को भुरभुरा बना लें।
- सरसों की फसल के लिए आपको खेत में कतार से कतार और पौध से पौध से 6 इंच चौड़ा व 8 से 10 इंच गहरा गड्ढा करना है।
- फिर इसे आपको दो से तीन दिन के लिए ऐसे ही छोड़ देना चाहिए।
- इसके बाद आपको 1 एकड़ खेत में लगभग 50-60 क्विंटल कम्पोस्ट खाद में 4 से 5 किग्रा। ट्राइकोडर्मा, 27 किग्रा। डीएपी और 13।5 किग्रा। म्यूरेट ऑफ पोटाश को अच्छी तरह मिलाना है। इसे आपको एक गड्ढे में डालकर कम से कम एक दिन के लिए छोड़ देना है।
- फिर आपको खेत में बुवाई करने से 2 घंटे पहले नर्सरी में नमी बना लेनी है।
- इसके आधे घंटे के अंदर गड्ढे में बुवाई करनी चाहिए।
- ध्यान रहे कि बुवाई करने के लगभग 3 से 5 दिन तक खेत में नमी को बनाए रखें, जिससे पौधा अच्छी तरह से लगकर विकसित हो सके।

किसानों ने सीखी दूधिया मशरूम उत्पादन तकनीक

ग्वालियर। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर द्वारा मशरूम उत्पादन तकनीक पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । प्रशिक्षण में ग्वालियर के 28 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया । उदयपुर, अजयपुर, गिरवाई, तिघरा, चक्र केशवपुर आदि गांवों के 28 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में प्रशिक्षार्थियों को पावर पाइंट प्रेजेन्टशेन तथा भ्रमण द्वारा दूधिया मशरूम उत्पादन तकनीक, बटन मशरून उत्पादन तकनीक आदि की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र बांटे गये तथा युवाओं को कृषि अवशेषों के उपयोग द्वारा मशरूम उगाकर पौस्टिक भोजन तैयार करने के लिये प्रेरित किया गया। केन्द्र के पादप संरक्षण वैज्ञानिक डा. अरविन्दर कौर, उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. रश्मि वाजपेयी, गृह वैज्ञानिक डॉ. सुरुचि सोनी, अर्थशास्त्र विशेषज्ञ डॉ. एससी श्रीवास्तव एवं समस्त वैज्ञानिक, परियोजना सहायक हरिओम यादव, जे आकाश, मशरूम उत्पादक आदि ने प्रशिक्षार्थियों को उत्पादन पर जानकारी दी। प्रशिक्षण का आयोजन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. राज सिंह कुशवाह के मार्गदर्शन में किया गया।

41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला

दिवसीय कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली मंजूरी

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

देश में विभिन्न फसलों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा लगातार फसलों की नई-नई किस्मों का विकास किया जा रहा है। इस क्रम में हाल ही में आलू अनुसंधान परियोजना को लेकर हुई तीन दिवसीय कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों एमएसपी/16-307 और कुफरी सुखयाति को मंजूरी दे दी गई है। यह दोनों किस्में ही अधिक पैदावार देने के लिए विकसित की गई है।

हरियाणा के हिसार में स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की स्वीकृति दे दी गई है।

आलू की इन नई किस्मों की खासियत

आलू की एमएसपी/16-307 और कुफरी सुखयाति किस्में अधिक पैदावार देने वाली हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता यह है कि इसके आलू व गुदा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सूख्याति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। वैज्ञानिकों ने इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की है। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आये वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।

उत्पादन एवं उत्पादकता में लाना है सुधार

सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रोद्योगिकी को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवतापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया।

वैज्ञानिकों ने किसानों को दी सलाह

पराली जलाने से खत्म हो जाती है मिट्टी की उर्वरता

भोपाल। जागत गांव हमार

पूसा के कृषि वैज्ञानिकों ने आने वाले दिनों में हल्की बारिश की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी है कि वो कटी फसलों को सुरक्षित कर लें। ताकि नुकसान न हो। किसानों को सलाह है कि खरीफ फसलों (धान) के बचे हुए अवशेषों (पराली) को न जलाएं। क्योंकि इससे वातावरण में प्रदूषण ज्यादा होता है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। इससे उत्पन्न धुंध के कारण सूर्य की किरणें फसलों तक कम पहुचती हैं, जिससे फसलों में प्रकाश संश्लेषण और वाष्पोत्सर्जन की प्रकिया प्रभावित होती है। ऐसा होने की वजह से पौधों को भोजन बनाने में कमी आती है। इस कारण फसलों की उत्पादकता व गुणवत्ता प्रभावित होती है।

ऐसे में किसानों को सलाह है कि धान के बचे हुए अवशेषों को जमीन में मिला दें, इससे मिटटी की उर्वकता बढ़ती है। साथ ही यह पलवार का भी काम करती है। जिससे मिट्टी से नमी का वाष्पोत्सर्जन कम होता है। नमी बनी रहती है। धान के अवशेषों को सड़ाने के लिए पूसा डीकंपोजर कैप्सूल का उपयोग करें। यह बहुत ही कारगर है। एक हेक्टेयर के खेत में धान की पराली को गलाने के लिए 4 कैप्सूल की जरूरत होगी।

कटाई से पहले बंद कर दें सिंचाई

मौसम को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह है कि धान की पकने वाली फसल की कटाई से दो सप्ताह पूर्व सिचाई बंद कर दें। फसल कटाई के बाद फसल को 2-3 दिन खेत में सुखाकर गहाई कर लें। उसके बाद दानों को अच्छी प्रकार से धूप में सूखा लें। अनाज को भंडारण में रखने से पहले भंडार घर की अच्छी तरह सफाई करें। रबी की फसल की बुवाई से पहले किसान अपने-अपने खेतों को अच्छी प्रकार से साफ-सुथरा करें। मेड़ों, नालों, खेत के रास्तों तथा खाली खेतों को साफ-सुथरा करें, ताकि कीटों के अंडे तथा रोगों के कारक नष्ट हो जाएं।

खेती में आर्थिक परेशानी से बचाने किसानों के लिए काफी फायदेमंद है क्रेडिट कार्ड

भोपाल। किसानों को खेती के दौरान आर्थिक परेशानी का सामना ना करना पड़े, इसके लिए किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम चलाई जा रही है। योजना के तहत किसान भाइयों को लोन की सुविधा भी मिल रही है।

पहले केवल खेती करने वाले किसानों को ही योजना के तहत लाभ दिए जाने की व्यवस्था थी, लेकिन अब मछली पालन और पशुपालन करने वाले किसान भाइयों को भी इस स्कीम के तहत लाभ दिया जा रहा है। किसान भाई फसल प्रबंधन के अलावा डेयरी के कार्यों और पंप सेट आदि खरीदने के लिए भी लोन ले सकते हैं। इस स्कीम के तहत सरकार ने ये बंदोबस्त किया है कि किसानों के पर ब्याज का अधिक दबाव ना पड़े। ब्याज के बढ़ जाने की वजह से खेती की लागत बढ़ जाती है। जिसकी वजह से किसान भाई कर्ज के बोझ में भी फंस जाते हैं। इससे किसानों को छुटकारा देने के लिए बैंकों के रेगुलर लोन से बहुत कम ब्याज केसीसी पर लिया जाता है।

केसीसी लोन ब्याज दो फीसदी से शुरू होती है। ये औसतन 4 फीसदी तक जाता है। ब्याज दर इस बात पर भी निर्भर करती है कि किसान भाई केसीसी का लोन कितने दिनों में चुका दते हैं। यदि किसान भाई कम समय में ही भुगतान करें तो उन्हें तीन लाख रुपये तक का लोन बेहद ही आसानी से 4 फीसदी की दर से मिल सकता है। वहीं, इसमें इंश्योरेंस का लाभ भी किसानों को मिलता है।

ये हैं जरूरी दस्तावेज

पहचान प्रमाण पत्र जैसे- आधार कार्ड, पैन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, आदि। जमीन के दस्तावेज। आवेदक का पासपोर्ट साइज का फोटो।

ऐसे करें अप्लाई

किसान भाई को प्रमाण पत्र, फोटो व भरा हुआ आवेदन पत्र बैंक में जमा करने पर किसान क्रेडिट कार्ड जारी होगा। आवेदन पत्र जमा करने के 15 दिन के अंदर केसीसी जारी हो जाएगा।

किसानों को समय-समय पर ध्यान देना होगा

फसल को बांझ बना देता है मोजेक रोग, किसान जानें बचाव का तरीका

भोपाल। जागत गांव हमार

अरहर की फसल में लगने वाला बांझपन मोजेक रोग काफी खतरनाक है। इसलिए फसल बचाने के लिए किसानों को समय-समय पर ध्यान देना होगा। फसल में लगने वाला बल बांझपन मोजेक रोग और बांझपन मोजेक वायरस यह रोग काफी खतरनाक और एक प्रमुख विषाणुजाति के रोग है। इस रोग के संक्रमण से अरहर के पौधे के गांठ छोटे-छोटे हो जाते हैं। इसके प्रभावित सभी पौधों भी बने रह जाते हैं। पूसा के डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के सह निदेशक अनुसंधान और विवि के पादप रोग विभाग के मुख्य वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि इस रोग के मुख्य रूप से तीन प्रकार के लक्षण होते हैं। जैसे पूर्ण बंधता के साथ पत्रक में गंभीर पच्चीकारी, आंशिक बांधता के साथ-साथ मृदु पच्चीकारी और हरित ही प्रभामंडल के गिरे एक हरे दीप की विशेषता वाले गोल धब्बे इस रोग के लक्षण होते हैं। इसके अलावा एक अन्य लक्षण में अरहर की शाखाओं के शीर्ष पर झाड़ीदार रूप जैसा बन जाता है।

कीट से ऐसे करें बचाव

वैज्ञानिक ने बताया कि बांझपन मोजेक रोग और बांझपन मोजेक वायरस यह रोग काफी खतरनाक है। इसलिए अरहर उत्पादक किसान अरहर की बुआई के 40 दिन बाद तक इस रोग से संक्रमित सभी पौधों को खेतों से खोज-खोज कर उखाड़ कर बाहर निकाल दें। अगर इस रोग का पता किसानों को 40 दिन के बाद चलता है, तो वे रोग दिखने के तुरंत बाद फेनाजाक्विन दवाई का एक एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर अरहर की फसल पर छिड़काव कर दें। यदि उसके बाद भी फिर इस तरह का रोग से प्रभावित पौधा दिखे तो किसान 15 दिनों के बाद फिर इस विधि को दोहराए जिससे पौधे में लगने वाले इस रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

कांग्रेस ने किसानों को दिया वचन, किसानों को गेहूं का 2600 और धान का 2500 रुपए दाम

सरकार बनी तो गाय का गोबर दो रुपए किलो खरीदेंगे

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में अगले महीने होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए इस बार विपक्षी दल पूरी तरह से तैयार नजर आ रहा है। कांग्रेस ने चुनावी रण की शुरुआत करते हुए अपना वचन पत्र (घोषणा पत्र) भी जारी कर दिया है। घोषणापत्र में कुछ ऐसी बातें भी देखने को मिलीं जो अब सुर्खियां बटोरती नजर आ रही हैं। पूर्व सीएम कमल नाथ ने कहा कि हम गाय का गोबर दो रुपए किलो खरीदेंगे।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत 1200 रुपए दिए जाएंगे। मेरी बेटी रानी योजना के तहत जन्म से लेकर शादी तक 2 लाख रुपए दिए जाएंगे। इसके अलावा एमपी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी किसानों पर खास ध्यान देती नजर आ रही है। ऐसे में आइए जानते हैं कि आगामी विधानसभा चुनाव में किसानों के लिए घोषणा पत्र में क्या-क्या शामिल किया गया है।

किसानों के लिए इन चीजों को किया गया शामिल

- किसानों को गेहूं का 2600/- और धान का 2500/- रुपए मूल्य देगी।
- 5 हार्सपॉवर फ्री बिजली देने के साथ 10 हार्सपॉवर तक 50 प्रतिशत छूट देंगे।
- किसान भाइयों को किसान फेण्डली एप उपलब्ध कराएंगे।
- नंदिनी गोधन योजना प्रारंभ करेंगे। जिसके माध्यम से 2 रुपए प्रति किलो की दर से गोबर खरीदेंगे।
- कांग्रेस ने जो 1000 गौशालाएं प्रारंभ की थी, जिसे भाजपा ने बंद कर दिया है उन्हें पुनः प्रारंभ करेंगे।
- गो ग्रास अनुदान बढ़ाएंगे।
- सहकारी क्षेत्र के माध्यम से दूध खरीदी पर 5 रुपए प्रति लीटर बोनस देंगे।
- मछुआरों कृषकों को मत्स्य का अधिकार देंगे।
- सहकारी संस्थाओं में 50 प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण देंगें।
- खेतिहर श्रमिकों को फसल रक्षक का नाम देंगे एवं प्रशिक्षण देकर किट देंगे।
- सिंचाई क्षमता बढ़ायेंगे एवं समितियों के चुनाव करायेंगे।
- ताप्ती, तमस एवं वेतवा नदी विकास प्राधिकरण गठित करेंगे। प्रदेश में लुप्त हो रही नदियों के संरक्षण के लिए भागीरथ नदी संरक्षण कार्य म प्रारंभ करेंगे।
- मां नर्मदा संरक्षण अधिनियम बनाएंगे। नर्मदा परिक्रमा परिषद का गठन करेंगे एवं नर्मदा परिक्रमा यात्रा प्रारंभ करेंगे।

खेती में पेस्ट कंट्रोल और पैदावार बढ़ाने में मदद करेंगी कंपनियां

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

कृषि मंत्रालय ने खेती-बाड़ी के क्षेत्र में सुधार के लिए स्टार्टअप और कंपनियों से सात नवंबर तक एक्सप्रेसन ऑफ इंटरेस्ट मंगाए हैं। इस ईओआई में कई अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने की योजना बनाई गई है। स्टार्टअप और कंपनियों से नौ क्षेत्रों में काम के लिए सुझाव मांगा गया है। इन नौ क्षेत्रों में मौसम और उससे जुड़ी सेवाएं, फसल पैदावार का अनुमान और कीटनाशकों पर नियंत्रण जैसे काम शामिल हैं।

मंत्रालय ने की नौ क्षेत्रों की पहचान - कृषि मंत्रालय ने उन नौ क्षेत्रों की पहचान की है जहां कंपनियां पहले से काम कर रही हैं। आगे जो भी स्टार्टअप या कंपनियां इस क्षेत्र में काम करना चाहेंगी उनके प्रस्ताव का 17 सदस्यों की एक स्क्रीनिंग कमेटी मूल्यांकन करेगी। कृषि मंत्रालय के अवर सचिव इस कमेटी की अध्यक्षता करेंगे और मेंबर के तौर पर आईसीएआर, आईआईटी, आईआईएम और नीति आयोग के सदस्य शामिल होंगे। जो भी कंपनियां कृषि क्षेत्र में काम करना चाहेंगी, पहले उन्हें अपना प्रस्ताव पत्र देना होगा।

फिर कृषि मंत्रालय की कमेटी उनके प्रस्ताव का प्रेजेंटेशन देखेगी। इस प्रेजेंटेशन में टेक्नोलॉजी पर बात की जाएगी जो कि कृषि से जुड़ी होगी। स्टार्टअप या कंपनियों के दिए आइडिया को स्क्रीनिंग कमेटी देखेगी और परखेगी। इसी आधार पर स्क्रीनिंग कमेटी किसी कंपनी के प्रस्ताव को मंजूर करने या खारिज करने की सिफारिश करेगी।

कंपनियों से मांगे गए सुझाव

जिस कंपनी का चयन किया जाएगा, सरकार की तरफ से उस कंपनी को फंड जारी किया जाएगा जो कि ग्रांट के तौर पर होगा। इसमें सबसे अधिक मौसम का डेटा जुटाने पर जोर दिया जा रहा है। कंपनियां या स्टार्टअप इस दिशा में काम करेंगे और सरकार को इसमें मदद करेंगे। इसके अलावा फसल उत्पादन अनुमान को भी जुटाने पर ध्यान दिया जाएगा। ग्रामीण स्तर पर धान या गेहूं की कितनी पैदावार हो सकती है, इस तरह की जानकारी कंपनियां या स्टार्टअप जुटाएंगे। इस दिशा में कीटों के प्रबंधन पर भी बड़े स्तर पर काम होगा। अभी देश के कई राज्यों में कपास की फसल पर पिंक बॉलवर्म का आ मण देखा गया है जिससे पैदावार गिरने की आशंका है। इन कीटों का हमला इसलिए हुआ है क्योंकि मौसम में अचानक बदलाव हो गया। इस खतरे को देखते हुए सरकार मौसम जनित कीटों के प्रकोप से फसलों को बचाने पर काम कर ही है। इसके लिए भी कृषि मंत्रालय ने कंपनियों और स्टार्टअप से सुझाव मांगे हैं।

सबके प्रयासों से कृषि में बेहतर नतीजे परिलक्षित हो रहेः तोमर

नई दिल्ली। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने वर्ष 2022-23 के लिए मुख्य फसलों के उत्पादन के अंतिम अनुमान जारी कर दिए हैं। इसके अनुसार, देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 3296.87 लाख टन अनुमानित है, जो 2021-22 के 3156.16 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 140.71 लाख टन अधिक है। इसके अलावा, वर्ष 2022-23 के दौरान खाद्यान्न उत्पादन गत 5 वर्षों (2017-18 से 2021-22) के औसत खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 308.69 लाख टन अधिक है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन पर कहा है कि हमारे किसान भाई-बहन लगातार कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वहीं कृषि वैज्ञानिक व संस्थान भी बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। पीएम के नेतृत्व में कृषि मंत्रालय द्वारा योजनाओं-कार्यक्रमों का सुचारू रूप से क्रियान्वयन हो रहा है। इस तरह सबके प्रयासों से कृषि क्षेत्र में रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन सहित बेहतर नतीजे परिलक्षित हो रहे हैं।

गेहूं उत्पादन 1105.54 लाख टन अनुमानि

अंतिम अनुमान के अनुसार, 2022-23 के दौरान मुख्य फसलों के उत्पादन के आंकड़े (लाख टन में) इस प्रकार हैं - खाद्यान्न - 3296.87 ,चावल- 1357.55 , गेहूं- 1105.54, मोटे अनाज-573.19, मक्का-380.85, दलहन- 260.58, तूर- 33.12, चना- 122.67, तिलहन - 413.55, मूंगफली- 102.97, सोयाबीन- 149.85, रेपसीड एवं सरसो- 126.43, गन्ना -4905.33, कपास- 336.60 लाख गांठें पटसन एवं मेस्टा- 93.92 लाख गांठें (प्रति 180 किग्रा)। वर्ष 2022-23 के दौरान चावल का कुल उत्पादन रिकॉर्ड 1357.55 लाख टन अनुमानित है। यह पिछले वर्ष के 1294.71 लाख टन चावल उत्पादन से 62.84 लाख टन एवं विगत पांच वर्षों के 1203.90 लाख टन औसत उत्पादन से 153.65 लाख टन अधिक है। वर्ष 2022-23 के दौरान गेहूं का कुल उत्पादन रिकॉर्ड 1105.54 लाख टन अनुमानित है। यह पिछले वर्ष के 1077.42 लाख टन गेहूं उत्पादन से 28.12 लाख टन एवं 1057.31 लाख टन औसत गेहूं उत्पादन की तुलना में 48.23 लाख टन अधिक है।

नाराज किसानों ने कार्यालय पहुंचकर की शिकायत

-बोले- हमें अनाज नहीं बीज चाहिए

सिवनी मालवा में बीज निगम से मिल रहा अमानक बीज

सिवनी मालवा। जागत गांव हमार

सिवनी मालवा में बीज निगम से किसानों को दिए जा रहे अमानक बीज से किसानों में भारी आक्रोश है। किसानों का आरोप है कि बीज निगम से किसानों को जो बीज दिया जा रहा है, वह चना का बीज नहीं है। बीज के नाम पर अमानक बीज देकर किसानों से धोखा किया जा रहा है। आक्रोशित दर्जनों किसानों ने वरिष्ठ कृषि अधिकारी एवं बीज निगम अधिकारी से मिलकर समस्या बतलाते हुए कहा कि हमें अनाज नहीं, बोवनी करने के लिए बीज चाहिए। बीज निगम के अधिकारियों का कहना है कि बीज अमानक नहीं है। प्रमाणिकता विभाग ही बीज को पास करता है। हमने सैकड़ों किसानों को बीज दिया है, लेकिन शिकायत नहीं आई। आज ही किसी बोरी में हो सकता है थोड़ा बहुत खराब हो गया हो। शिकायत आएगी तो कार्रवाई की जाएगी।

उत्पादन बहुत कम होगा

किसानों का कहना है कि अमानक बीज की बोवनी होने से किसानों के उत्पादन बहुत कम होगा ओर पैदावार में बहुत अंतर आएगा। साथ ही बोनी में बीज अधिक लगेगा। अमानक बीज से किसानों को बहुत नुकसान होगा। किसानों की समस्या को लेकर भारतीय किसान यूनियन प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष पटवारे भी बीज निगम पहुंचे और बीज निगम के गोदाम पर देखा तो वहां अमानक स्तर का चना बीज के रूप में दिया जा रहा था। संतोष पटवारे ने अधिकारियों से इसकी शिकायत कर कहा कि किसानों को जो चना दिया जा रहा है, वह बीज नहीं है। वहां मौजूद सभी किसानों का भी कहना है कि हमें अनाज नहीं बीज चाहिए। किसानों का कहना था कि जो चना दिया जा रहा है, उसमें 50 प्रतिशत नमी है। वहीं दाना छोटा और दाल तथा मिट्टी भी है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)